

२४ लि. लो. नै. मो. को.

ASHA ARCHIVES 3054

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गुरुवाच ॥ कथयस्व माहात्म्यं
सिद्धिस्तथा ह्यनुत्तमं । कवचं सर्वसिद्धीनां यत्कथयन्मनुजैः । स
र्वमनुमयं सर्वं त्रीणि त्रिकाकनं यत् । सर्वव्याधिहन्त्रं त्रैलोक्यं सर्वतन्त्रं
पूज्यं ॥ ॥ श्री हरे नमो वाच ॥ कथयामि वरा प्रोहं ॥ सर्व
रुकावली । तुं लोकां मोह नं नाम् । कवचं ह्यत्र यदि ती । यद्गुणाय च
ठिलं च साकाशं न गुरुत्वं वत् ॥ वनेर्द्धमं वा तु यत् ॥ ॥ वृत्तं नमि
मनीयम् । मदनो ह्यमनीयं नमि । सिद्धीनामपि नायकं ॥ ॥ लोकां मोह

ली ३

नस्यास्य कवचसूत्रं ध्यात्वा । सदा शिवमभिधाया । शिवसूत्रं च उदाहृतं
दी । दयता सिद्धिं लब्ध्वा । अतुल्यं विनिधातयाम् ॥

अथ सर्वदा पाठुः शिवायै न यात्स्य कथा । नुवन्मणी सदा पाठुः
ललाटमुखवृत्तकं । कुर्वीत जीवयायां । कलुषं ह्यसूक्ष्मं
॥ ६० ॥ यैर्वै ध्यातुं संयुक्तं । विन्दुना दकलानिर्गता । धियद्वा जीवयाया
उ । या । ध्यातुं च दयं मम ॥ या न वदति समावृत्तं । स विन्दुको दधे

ध्यात्वा । नाववीर्जया तु निश्चिन्ता । न हि क्वचिन्मनः । यन्मनः । नात्र हि हस
रु विजं । कविदधे सदा वदुः ॥ अथ सर्वदा पाठुः शिवायै न यात्स्य कथा । नुवन्मणी
सदा पाठुः । न कान् सर्वदा पाठुः । इत्युक्तं । न कान् सर्वदा पाठुः । न कान् सर्वदा पाठुः ।
या यो । या तु हीय न संकलना न वा कवी मला मनुः । सर्वदेहं न प्रा
पुमं ॥ महादुःखं सदा यायात् । न वा नो दधे क्वचिन्मनः । यन्मनः । नात्र हि हस
लमा । प्रिता न मला यदि ॥ नाववीर्ज नात्र हि हस महाकान् न सं

कठ। वृद्धदयवदाष्ट्या तु मी सर्वदू ४ खन ४ ददयवा तु संग्र
 म. सर्वे या तु ० दय। जया या तु महाधा न. मनु ददा द ५५ कन
 ५५ न वाना व यीज यां या तु मां धा ० ५५ कनी। तान मा या तु व
 लु ५५ लु क प्रायं महा मनु ॥ या तु मां स कठे धा न. महा वियदि न २
 मने। नो वारु मं ह नव नि. धि ता न या तु नि ५५ ॥ सिद्धि लक्ष्मी स
 दा या तु. पूर्व सा दि भि नि ५५ स ५५ लु मि नो या तु द वि. तथा ५५
 यां नि न क न। च ५५ कया ति नी द वी. या मे या तु यू न ४ यू न ४ ५५

ता स न स मा नू र्ना न म. लां या तु सर्व द ॥ व ५५ व को या तु द वी. ५५
 ती दि नि नि ५५ ॥ वा य ५५ या तु नि ५५ मां द वि य ५५ द ५५ क ५५। वि क
 ५५ न द ५५ व को व प्र या तु नि ५५ स ५५। ली मा ह यं क नी या या द ५५
 यां दि नि स ५५ दा। न क मा स यि या दे वी. ५५ न ५५ द व या तु मां ॥ ५५
 नि न क व द दे वि. क मि न म लु वि ५५ ह। या व ला व न दा न द य ५५ य हा क
 सा यि ह न वी। या व ला व नु न नु. म मा म क नि का न की। न न म ५५

हं न क्षयिष्ये न धृष्ट्या विविधं सुत ॥ १ ॥ अथ न र्यं ल सं याच वा दू ल
 नाक्षु लजनी द नाना सय मा न न विद धी च न धा विधि। वू मानि
 हो ज न क्ष नै का व नी यं पु यत् न ॥ २ ॥ सर्व य द सु स्थ जे न्य नि ३
 न क्षु ला द्धु या दा स व दै व ना प्रा ह सि द्धि या द्ये ह व नि दि। सं गु भ
 ज य मा ध्या नि वि पू न हो न प्र या त् ॥ ३ ॥ पु ठे ति सि ता तु ध न
 नि यं य यत् न ॥ ४ ॥ अ यो ल ह पू र्ण द नि द्वा ल ह न व नी ॥ न म्मा

॥ ५ ॥ अथ द व नि व ज क्षू य वा स नि र् ॥ ६ ॥ दं क व र म स्ता ला सि द्धि
 ल क्षी र ज तु य ॥ ७ ॥ न स्य पू जा दि र्क सर्व निष्क लं ना ठ स स य ॥ ८ ॥ न
 स्मा सर्व यथे स्त न य ॥ ९ ॥ न वं स भा दि ते ॥ १० ॥ सर्व हो म म वा ध्या नि ४
 वा क्ष मा क म वा प्र या त् ॥ ॥ ११ ॥ ति श्री हं स मा र्क ॥ १२ ॥ व नी न तु ह न
 वी स वा द श्री ति दि ल क्षी ठे ला कु मा रु त ना म द व र स मा र्क ॥
 ॥ १३ ॥ ६ ला ड य दू ॥ १४ ॥ व दू ॥ १५ ॥ या अ मा र्क व न सि द्धि वा या ॥

ये प्रा युदध नि, वज्र पू वा सै निर्ह । ॐ दं क व च म ह्ना त्वा, सिद्धि
लक्ष्मी लज्ज दुय ॥ न स्या पू जा दि कं सर्व, निष्कूलं ना तु सै स्य ॥ न
स्मात्सर्व प्रये लै न, यति न वृं स भा दि ते ॥ सर्व शो ग म वा ध्या नि ४
वा क्त भा क्त म वा प्र या न् ॥ ॥ ॐ ति श्री हं सु मा र्क ६४ नी न कु रै न
वी स वा द श्री सिद्धि लक्ष्मी ते ला कु भा रु न ना म क व र्व स मा र्क ॥
॥ सै ५० ६ ला दु प क्त १२ थ कू दू ष्य कू या सु मा र्क ध न सि क वा या ॥